

रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान रूस के प्रति भारत की विदेश नीति

डॉ राजकुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा

सार

यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के प्रति भारत की प्रतिक्रिया प्रमुख लोकतंत्रों और अमेरिकी रणनीतिक साझेदारों के बीच विशिष्ट रही है। मॉस्को के युद्ध से अपनी असहजता के बावजूद, नई दिल्ली ने रूस के प्रति अध्ययनशील सार्वजनिक तटस्थता अपनाई है। इसने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, महासभा और मानवाधिकार परिषद में लगातार वोटों से परहेज किया है, जिसमें यूक्रेन में रूसी आक्रामकता की निंदा की गई थी और अब तक रूस को संकट के भड़काने वाले के रूप में खुले तौर पर बुलाने से इनकार कर दिया है। राष्ट्रपति जो बिडेन के प्रशासन सहित संयुक्त राज्य अमेरिका में कई लोगों के लिए, भारत की तटस्थता निराशाजनक रही है क्योंकि इसने वैश्विक व्यवस्था के बुनियादी मुद्दे पर वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच तीव्र मतभेद का संकेत दिया है, अर्थात्, सीमाओं को बदलने और कब्जा करने के लिए बल का उपयोग करने की वैधता विजय के ज़बरदस्त युद्ध के माध्यम से दूसरे देश का क्षेत्र। यूक्रेन युद्ध की उत्पत्ति और उसके कारणों पर उनके विचार जो भी हों, अधिकांश भारतीय रणनीतिक अभिजात वर्ग यह स्वीकार करेंगे कि उनके देश की कूटनीतिक तटस्थता अंततः वही दर्शाती है जिसे एक भारतीय विद्वान ने "एक सूक्ष्म मास्को समर्थक स्थिति" कहा है।

मुख्य शब्द: रूस-यूक्रेन, भारत

परिचय

सितंबर 2022 में उज्बेकिस्तान के समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के बीच हुई मुलाकात ने रूस और भारत के बीच साझेदारी में हो रहे बदलाव को दर्शाया। यूक्रेन पर क्रेमलिन के आक्रमण के बारे में बोलते हुए, मोदी ने सार्वजनिक रूप से चेतावनी देते हुए पुतिन से कहा कि उन्होंने कूटनीति पर भरोसा करने और युद्ध को समाप्त करने के लिए शांति का रास्ता अपनाने की आवश्यकता के बारे में उनसे "पहले भी कई बार" बात की थी। भोजन और ईंधन की कीमतें बढ़ गई थीं।¹ शी

जिनपिंग, जो एससीओ सभा में भी शामिल हुए थे, ने पुतिन के युद्ध का समर्थन नहीं किया, लेकिन न ही उन्होंने इसकी खुलकर आलोचना की; मोदी ने किया. भारत, हालांकि यह लंबे समय से रूस पर निर्भर रहा है और अभी भी इसे एक महत्वपूर्ण देश मानता है, तेजी से अपनी भागीदारी की शर्तें निर्धारित करना चाहता है।

रूस और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण, पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है। शीत युद्ध के दौरान, एक महाशक्ति के रूप में सोवियत संघ का भारत के साथ संबंधों में ऊपरी हाथ था, जो "विकासशील" राष्ट्रों के समुदाय का हिस्सा था, हालांकि गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेताओं में से एक भी था। सोवियत संघ के टूटने और उसके बाद रूस की कम होती अंतरराष्ट्रीय स्थिति ने भारत के प्रति संबंधों में संतुलन बदल दिया, जो 1990 के दशक की शुरुआत में शुरू किए गए आर्थिक सुधारों और साथ ही बढ़ती वैश्विक उपस्थिति के कारण एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा था। मॉस्को और नई दिल्ली के बीच जारी मैत्रीपूर्ण और व्यापक संबंधों में, कोई भी पर्यवेक्षक मॉस्को को कनिष्ठ भागीदार के रूप में वर्णित नहीं करेगा।

24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद, यह संबंध चार कारणों से और भी बड़े परिवर्तन से गुजरने के लिए तैयार है:

रूस का चीन के साथ और अधिक घनिष्ठ संबंधों का प्रयास।

रूस के लिए भारत की तुलना में चीन के साथ उसके संबंधों का अधिक महत्व है।

भारत की विदेश नीति के एजेंडे में रूस का महत्व कम होना।

संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत के बढ़ते सुरक्षा संबंध।

यह पेपर सबसे पहले शीत युद्ध की समाप्ति से लेकर फरवरी में यूक्रेन पर आक्रमण की शुरुआत तक रूसी-भारत संबंधों और इसके विकास के आसपास के रणनीतिक संदर्भ प्रदान करता है। इसके बाद यह संबंधों का एक विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रदान करता है, जिसमें सोवियत काल की विरासत, सोवियत संघ के टूटने के बाद की अवधि और आक्रमण के बाद की गतिशीलता शामिल है। अंत में, यह संबंध किस दिशा में आगे बढ़ सकता है, इसके लिए दो परिदृश्य प्रस्तुत करता है और अमेरिकी हितों पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ समाप्त होता है।

भारत - रूस संबंध

रूस के साथ संबंध भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं और रूस भारत का दीर्घकाल से समय की कसौटी पर खरा उतरा भागीदार देश है। अक्टूबर 2000 में "भारत-रूस कूटनीतिक

भागीदारी संबंधी घोषणा" पर (रूस के राष्ट्रपति महामहिम ब्लादीमिर पुतिन की भारत यात्रा के दौरान) हस्ताक्षर किए जाने के बाद से भारत-रूस संबंधों में गुणवत्ता की दृष्ट से नई विशेषता आई है जिनमें द्विपक्षीय संबंधों के लगभग सभी क्षेत्रों में सहयोग का स्तर बढ़ गया है जिनमें राजनीति, सुरक्षा, व्यापार एवं अर्थव्यवस्था, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और संस्कृति शामिल हैं। कूटनीतिक भागीदारी के अंतर्गत, सहयोग संबंधी गतिविधियों पर नियमित बातचीत एवं अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए राजनैतिक एवं आधिकारिक दोनों स्तरों पर विभिन्न संस्थागत संवाद कार्यक्रमों का काम कर रहे हैं। दिसंबर 2010 में रूस के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान, कूटनीतिक भागीदारी को "विशेष एवं अधिकारप्राप्त कूटनीतिक भागीदारी" के स्तर पर पहुंचा दिया गया।

राजनीतिक संबंध

दिसंबर 2010 में रूस के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान, कूटनीतिक भागीदारी को "विशेष एवं अधिकारप्राप्त कूटनीतिक भागीदारी" के स्तर पर पहुंचा दिया गया। अब तक बारी बारी से भारत और रूस में 16 वार्षिक शिखर बैठकें हो चुकी हैं जिनमें से 16वीं वार्षिक शिखर बैठक 23 और 24 दिसंबर 2014 को मास्को में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की रूस यात्रा के दौरान में हुई थी। इस शिखर बैठक के दौरान 17 दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए जिसमें परमाणु ऊर्जा, रक्षा, हाइड्रोकार्बन, सेटलाइट नेवीगेशन, रेलवे, सौर ऊर्जा, भारी इंजीनियरिंग, सुपर कंप्यूटिंग, वीजा सरलीकरण, आयुर्वेद एवं मीडिया में सहयोग जैसे क्षेत्र शामिल थे। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पुतिन द्वारा एक संयुक्त वक्तव्य "साझा विश्वास, नए क्षितिज" भी अपनाया गया। दिसंबर 2015 में वार्षिक शिखर बैठक के अलावा हमारे प्रधानमंत्री ने 8 जुलाई 2015 को उफा, रूस में 7वीं ब्रिक्स शिखर बैठक तथा एस सी ओ शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में भी रूस के राष्ट्रपति के साथ बैठक की। भारतीय राष्ट्रपति ने 9 मई, 2015 को मास्को में द्वितीय विश्व युद्ध में विजय की 70वीं वर्षगांठ के संस्मारक समारोह में भाग लिया तथा अतिरिक्त समय में राष्ट्रपति पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

दोनों देशों के बीच उच्च स्तर पर नियमित रूप से बातचीत होती रहती है। दो अंतर-सरकारी आयोगों की वार्षिक बैठकें होती हैं जिनमें से एक व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग (आईआरआईजीसी- टीईसी) से संबंधित है, जिसकी सह-अध्यक्षता विदेश मंत्री और रूसी उप प्रधान मंत्री द्वारा की जाती है, और दूसरा सैन्य तकनीकी सहयोग (आईआरआईजीसी - एमटीसी) से संबंधित, जिसकी सह-अध्यक्षता रूसी और भारतीय रक्षा मंत्री

द्वारा की जाती है। विदेश मंत्री ने 20 अक्टूबर 2015 को आई आर आई जी सी - टी ई सी की 21 वीं बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए मास्को का दौरा किया तथा रूस के अपने समकक्ष से भी मुलाकात की। भारत और रूस के विदेश मंत्री 2015 में इससे पहले दो बार मिल चुके हैं, 2 फरवरी 2015 को वीजिंग में रूस- भारत - चीन (आर आई सी) विदेश मंत्री बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में और सितंबर 2015 में न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 70वें सत्र के दौरान ब्रिक्स विदेश मंत्री बैठक में। विदेश सचिव ने 19 अक्टूबर 2015 को मास्को का दौरा किया तथा रूस के प्रथम उप विदेश मंत्री ब्लादिमीर टिटोव तथा उप विदेश मंत्री इगोर मोर्गुलोव के साथ विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओसी) का आयोजन किया। उप प्रधानमंत्री रोगोजिन ने 8 दिसंबर 2015 को भारत का दौरा किया तथा इस यात्रा के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से मुलाकात की।

भारत - रूस अंतर संसदीय आयोग की तीसरी बैठक की लोक सभा अध्यक्ष के साथ सह अध्यक्षता करने के लिए राज्य डुमा (रूसी संसद का निचला सदन) के अध्यक्ष ने फरवरी, 2015 में भारत का दौरा किया। उन्होंने भारत के राष्ट्रपति एवं उप राष्ट्रपति से भी मुलाकात की। मार्च 2015 में रूस के दूरसंचार एवं जन संचार मंत्री श्री निकोलाय निकिफोरोव ने दिल्ली का दौरा किया जहां उन्होंने अपने भारतीय समकक्ष संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री तथा सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री से मुलाकात की। अप्रैल 2015 में, भारत के रक्षा राज्य मंत्री ने मास्को का दौरा किया तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर चौथे मास्को सम्मेलन में भाग लिया और रक्षा उद्योग सहयोग पर एसोचैम - सबेरबैंक सम्मेलन को संबोधित भी किया। भारत के मुख्य न्यायाधीश तथा विधि एवं न्याय मंत्री ने मई, 2015 में सेंट पीटर्सबर्ग अंतर्राष्ट्रीय विधि मंच में भाग लिया। जून 2015 में, 15 वें सेंट पीटर्सबर्ग अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंच (एस पी ई आई एफ) में भाग लेने के लिए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने सेंट पीटर्सबर्ग का दौरा किया तथा उन्होंने रूस के व्यापार एवं उद्योग मंत्री श्री डेनिस मेन्दुरोव से मुलाकात भी की। सितंबर 2015 में रूस के आंतरिक मंत्री श्री ब्लादिमीर कोलोकोल्सेव ने भारत का दौरा किया तथा हमारे गृह मंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

रूस ने अप्रैल 2015 में ब्रिक्स की अध्यक्षता ग्रहण की तथा तब से यह ब्रिक्स फार्मेट के तहत अनेक कार्यक्रमों एवं बैठकों का आयोजन कर रहा है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री ने 21 अप्रैल, 2015 को ब्रिक्स पर्यावरण मंत्री बैठक के लिए मास्को का दौरा किया, सचिव (पूर्व) ने 22 मई, 2015 को मास्को में मध्य पूर्व तथा उत्तरी अफ्रीका पर ब्रिक्स परामर्श में भाग

लिया, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने 25 एवं 26 मई, 2015 को सुरक्षा समस्याओं के लिए ब्रिक्स के उच्च प्रतिनिधियों की 5वीं बैठक में भाग लेने के लिए मास्को का दौरा किया तथा विदेश मामले पर संसदीय स्थाई समिति के अध्यक्ष ने 8 जून, 2015 को मास्को में ब्रिक्स संसदीय मंच में भाग लिया। वित्त मंत्री ने 7 जुलाई को मास्को में ब्रिक्स विदेश मंत्री बैठक में भाग लिया और उफा में ब्रिक्स शिखर बैठक में भाग लिया। प्रधानमंत्री ने 8 और 9 जुलाई को उफा, रूस में 7वीं ब्रिक्स शिखर बैठक में भाग लिया तथा एस सी ओ के पूर्ण सत्र में भी भाग लिया जहां इस संगठन में भारत की सदस्यता की प्रक्रिया शुरू करने पर निर्णय लिया गया। अक्टूबर 2015 में ब्रिक्स के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भारत के गृह राज्य मंत्री एवं कृषि मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री ने रूस का दौरा किया, जबकि विदेश मंत्री ने आई आर आई जी सी - टी ई सी सत्र की सह अध्यक्षता करने के लिए 20 अक्टूबर को मास्को की अपनी यात्रा के दौरान ब्रिक्स औद्योगिक मंत्री बैठक में भाग लिया।

रक्षा सहयोग :

रक्षा क्षेत्र में रूस के साथ भारत के संबंध दीर्घकालिक और व्यापक सहयोग वाले रहे हैं। भारत-रूस सैन्य तकनीकी सहयोग एक साधारण क्रेता-विक्रेता फ्रेमवर्क से आगे बढ़ कर एक ऐसा फ्रेमवर्क बन गया है जिसमें उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों और प्रणालियों का संयुक्त अनुसंधान, विकास और उत्पादन का काम शामिल है। ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम, पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान और मल्टी ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट की संयुक्त डिजाइन एवं विकास और एसयू- 30 विमान और टी-90 टैंकों का लाइसेंसयुक्त उत्पादन ऐसे बड़े सहयोग के उदाहरण हैं। जून, 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रूस द्वारा निर्मित विमान वाहक जहाज आई एन एस विक्रमादित्य को गोवा के तट पर एक विशेष समारोह में राष्ट्र को समर्पित किया। दोनों देश अपने सशस्त्र बलों के बीच वार्षिक रूप से आदान-प्रदान एवं प्रशिक्षण अभ्यास भी आयोजित करते हैं। एक भारतीय टुकड़ी ने द्वितीय विश्व युद्ध में विजय की 70वीं वर्षगांठ के दौरान 9 मई, 2015 को मास्को में सैनिक परेड में हिस्सा लिया।

दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों की सह अध्यक्षता में सैन्य तकनीकी सहयोग पर अंतरसरकारी आयोग (आई आर आई जी सी - एम टी सी) तथा दोनों देशों बीच इसके कार्य समूहों एवं उप समूहों की रक्षा सहयोग समीक्षा । भारत के रक्षा मंत्री ने चल रहे सहयोग की समीक्षा करने तथा द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए भावी अवसरों पर विचार करने के लिए 2 नवंबर 2015 को रूस

के रक्षा मंत्री सर्गेई सोगू के साथ आयोग की 15वीं बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए मास्को का दौरा किया। दिसंबर 2014 में, दोनों देशों की सरकारों ने रूसी परिसंघ के रक्षा मंत्रालय के सैन्य शिक्षा प्रतिष्ठानों में भारत के सहस्र बलों के कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए करार पर हस्ताक्षर किए। 24 दिसंबर 2015 को वार्षिक शिखर बैठक में भारत में का-226 हेलीकाप्टर के विनिर्माण के लिए दोनों देशों की सरकारों के बीच करार पर हस्ताक्षर किए गए जो मेक इन इंडिया पहल के तहत पहली बड़ी रक्षा परियोजना है।

आर्थिक संबंध

भारत और रूस के बीच आर्थिक साझेदारी को सामरिक साझेदारी के अन्य स्तंभों के रूप में एक मजबूत स्तंभ बनाना दोनों देशों सरकारों की मुख्य प्राथमिकता है। कारोबारियों के अबाध एवं अधिक आवागमन को प्रोत्साहित करने के लिए दोनों देशों ने कारोबारियों तथा संघों के प्रतिनिधियों के लिए वीजा प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए 24 दिसंबर 2015 को एक प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किया है।

दिसंबर 2014 में भारत और रूस के नेताओं ने वर्ष 2025 तक 30 बिलियन यूएस डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य तय किया है। वर्ष 2014 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 9.51 बिलियन अमरीकी डालर था जिसमें भारत के निर्यात का मूल्य 3.17 बिलियन अमरीकी डालर था (जो वर्ष 2013 की तुलना में 2.6 प्रतिशत अधिक है) तथा रूस से आयात का मूल्य का 6.34 बिलियन अमरीकी डालर था (जो वर्ष 2013 की तुलना में 9.2 प्रतिशत कम है)। भारत से निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में भेषज पदार्थ, विविध विनिर्माण, लौह एवं इस्पात, परिधान, चाय, कॉफी और तम्बाकू शामिल हैं। रूस से आयात की जाने वाली मुख्य वस्तुओं में रक्षा एवं परमाणु ऊर्जा उपकरण, उर्वरक, बिजली की मशीनरी, स्टील और हीरे शामिल हैं।

रूस में भारतीय निवेश लगभग 8 बिलियन यूएस डॉलर होने का अनुमान है जिनमें इंपीरियल इनर्जी टॉम्स्क; सखालीन आई; वोल्ज़ास्की अब्रेसिव वक्स वोल्गोग्राड; और कमर्शियल इंडो बैंक शामिल हैं। भारत में लगभग 3 बिलियन यूएस डॉलर के रूसी निवेश में होसुर में कमाज वेक्टर; श्याम सिस्टमा टेलीकॉम लिमिटेड, एसबरबैंक और वीटीबी शामिल हैं।

आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग (आईआरआईजीसी-टीईसी) आर्थिक सहयोग की समीक्षा करने वाला सर्वोच्च जी-टू-जी मंच है। यह व्यापार एवं आर्थिक सहयोग, प्राथमिकता वाले निवेशों, आधुनिकीकरण और औद्योगिक सहयोग

(नागर विमान, खनन, उर्वरक और आधुनिकीकरण संबंधी उप समूहों), बकाया मुद्दों, ऊर्जा एवं ऊर्जा कार्यकुशलता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन तथा संस्कृति, और बैंकिंग तथा वित्तीय मामलों एवं बाघ एवं तेंदुआ संरक्षण संबंधी मामलों के उप समूहों के तहत क्षेत्रीय सहयोग की समीक्षा करता है। व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग का 21वां सत्र 20 अक्टूबर 2015 को मास्को में आयोजित किया गया था।

भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री तथा रूस के आर्थिक विकास मंत्री की सह-अध्यक्षता वाला भारत-रूस व्यापार एवं निवेश मंच और भारत-रूस सीईओ काउंसिल भारत और रूस के बीच प्रत्यक्ष परस्पर द्विपक्षीय व्यापारिक संपर्कों को बढ़ावा देने वाले दो प्राथमिक कार्यतंत्र हैं। भारत-रूस व्यावसायिक परिषद (भारत के फिक्की और रूस के सीसीआई के बीच भागीदारी), भारत-रूस व्यावसायिक संवाद (भारत के सीआईआई और रूस के बिजनेस काउंसिल फॉर को- ऑपरेशन विद इंडिया के बीच भागीदारी) और भारत-रूस चैम्बर ऑफ कॉमर्स (एसएमई पर विशेष ध्यान के लिए) जैसे कार्यतंत्र प्रत्यक्ष व्यवसाय से व्यवसाय संबंधों को बढ़ाने के प्रयासों को सम्पूरित करते हैं। व्यापार एवं निवेश पर 8वें भारत - रूस मंच का आयोजन 5 नवंबर, 2014 को नई दिल्ली में किया गया था। जून 2015 में, 15वें सेंट पीटर्सबर्ग अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंच (एस पी आई ई एफ) के दौरान भारत और यूरोशियाई आर्थिक संघ (ईए ईयू) द्वारा भारत और यूरोशियाई आर्थिक संघ के बीच मुक्त व्यापार करार के लिए संयुक्त संभाव्यता अध्ययन संचालित करने के लिए एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किया गया।

हाइड्रो कार्बन दोनों देशों के बीच सहयोग की पड़ताल करने के लिए एक सक्रिय क्षेत्र है। मई 2014 में, ओ एन जी सी तथा रोसनेफ्ट ने रूस के आर्कटिक के तटवर्ती क्षेत्र में सरफेस सर्वेक्षण, खोज, मूल्यांकन और हाइड्रो कार्बन उत्पादन में द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। जून 2014 में, एक रूसी कंपनी गाजप्रोम इंटरनेशनल ने तेल और गैस के क्षेत्र में सहयोग के लिए ऑइल इंडिया लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसमें तेल क्षेत्रों की संयुक्त खोज और प्रशिक्षण, विकास तथा जानकारी का आदान-प्रदान शामिल है।

दिसंबर 2014 में रोसनेफ्ट ने कच्चे तेल की आपूर्ति के लिए एस्सार ग्रुप के साथ एक दीर्घकालिक संविदा की संभावना संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। जुलाई 2015 में एस्सार और रोसनेफ्ट ने एस्सार के वाडीनार ऑयल रिफायनरी में 49 प्रतिशत शेयर का अधिग्रहण करने और

10 वर्षों तक एस्सार को कच्चे तेल की आपूर्ति करने के लिए एक प्रारंभिक करार पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की है। सितंबर 2015 में ओ वी एल

ने वैकोरनेफ्ट परियोजना में 15 प्रतिशत शेयर का अधिग्रहण करने के लिए रोसनेफ्ट के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया है। 16वीं वार्षिक शिखर बैठक के दौरान ओ वी एल, ऑयल इंडिया लिमिटेड और इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड ने हाइड्रोकार्बन के क्षेत्र में सहयोग के लिए रोसनेफ्ट के साथ करारों पर हस्ताक्षर किए हैं।

दिसंबर 2015 में टाटा पावर ने इस क्षेत्र में ऊर्जा क्षेत्र में निवेश परियोजनाओं के लिए रूस के सुदूर पूर्व विकास मंत्रालय के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया है; भारत और रूस की रेलवे में भी भारत में हाई स्पीड रेल तथा रेलवे के आधुनिकीकरण के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किया है; हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन (एच ई सी), रांची ने एच ई सी की सुविधाओं के आधुनिकीकरण के लिए तथा भारत में एक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित करने के लिए रूसी कंपनी क्लिट्समैश के साथ करारों पर हस्ताक्षर किए हैं; और भारतीय सौर ऊर्जा निगम ने भारत में सौर संयंत्रों के निर्माण के लिए अपने रूसी समकक्ष के साथ एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया है।

परमाणु ऊर्जा :

रूस परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में एक महत्वपूर्ण भागीदार है और यह भारत को एक त्रुटिरहित परमाणु अप्रसार रिकॉर्ड के साथ उन्नत परमाणु ऊर्जा प्रौद्योगिकी वाला देश मानता है। दिसंबर, 2014 में, परमाणु ऊर्जा विभाग (डी ए ई) और रूस के रोसाटोम ने भारत और रूस के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों में सहयोग सुदृढ़ करने के लिए सामरिक विजन पर हस्ताक्षर किया। रूस के सहयोग भारत में कुडानकुलम परमाणु विद्युत संयंत्र (के के एन पी पी) का निर्माण से हो रहा है। कुडनकुलम परमाणु विद्युत संयंत्र (के के एन पी पी) की यूनिट - 1 जुलाई 2013 में चालू हो गया और 7 जून 2014 को इसने पूर्ण उत्पादन क्षमता हासिल कर ली थी, जबकि इसकी यूनिट-2 अगले वर्ष के पूर्वार्ध में चालू होने की प्रक्रिया में है। भारत और रूस ने के के एन पी पी यूनिट 3 एवं 4 पर एक सामान्य रूपरेखा करार पर हस्ताक्षर किया है तथा परवर्ती करार तैयार किए जा रहे हैं। परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों के क्षेत्र में व्यापक सहयोग की समीक्षा करने के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव ने 9 जून, 2015 को मास्को का दौरा किया। 24 दिसंबर 2015 को वार्षिक शिखर बैठक के दौरान भारत में परमाणु उपकरण के स्थानीयकरण के लिए एक करार पर भी निर्णय लिया गया।

अंतरिक्ष सहयोग :

बाहरी अंतरिक्ष का शांतिपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग करने संबंधी भारत - रूस सहयोग लगभग चार दशक पुराना है। इस साल रूस (तत्कालीन यू एस एस आर) के उपग्रह प्रक्षेपण वाहन 'सोयुज' पर भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' के प्रक्षेपण की 40वीं वर्षगांठ 2007 में, भारत और रूस ने बाहरी अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण प्रयोगों पर एक रूपरेखा करार पर हस्ताक्षर किया जिसमें उपग्रह प्रक्षेपित करना, ग्लोनास नेविगेशन, दूर संवेदी तथा बाहरी अंतरिक्ष के अन्य सामाजिक अनुप्रयोग शामिल हैं। जून 2015 में, दोनों देशों की अंतरिक्ष एजेंसियों ने शांतिपूर्ण प्रयोगों के लिए बाहरी अंतरिक्ष के अन्वेषण एवं प्रयोग के क्षेत्र में सहयोग के विस्तार पर एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया है। उपग्रह नेविगेशन पर आधारित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए सी-डैक और ग्लोनास के बीच एक करार पर हस्ताक्षर किया गया।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :

व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग संबंधी अंतर सरकारी आयोग (आई आर आई जी सी- टीईसी) के तहत कार्यरत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी कार्य समूह, समेकित दीर्घकालिक कार्यक्रम (आई एल टी पी) और बुनियादी विज्ञान सहयोग कार्यक्रम द्विपक्षीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए तीन मुख्य संस्थागत कार्यतंत्र हैं, जबकि दोनों देशों की विज्ञान अकादमियां अंतर-अकादमी आदान-प्रदान को बढ़ावा देती हैं। 25 साल की लंबी कार्यान्वयन अवधि के दौरान आई एल टी पी ने भारत एवं रूस में 500 से अधिक संयुक्त अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के संचालन तथा 9 विषयपरक केंद्रों की स्थापना में सहायता प्रदान की जिनसे 1500 से अधिक संयुक्त प्रकाशनों तथा 10000 से अधिक वैज्ञानिक करारों के विकास के अलावा अनेक नए उत्पादों, प्रक्रियाओं, सुविधाओं एवं अनुसंधान केंद्रों का सृजन हुआ है। भारत - रूस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, जिसकी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा मॉस्को में एक-एक शाखा है, की स्थापना प्रौद्योगिकियों के अंतरण और उनके वाणिज्यीकरण को बढ़ावा देने के लिए 2011-12 में की गई थी।

अक्टूबर 2013 में, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के क्षेत्र में तथा जैव प्रौद्योगिकी में संचालित दो नए कार्यक्रम सक्रिय तंत्र बन गए हैं; ये 2014 में 11 संयुक्त अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के पहले बैच की सहायता कर चुके हैं। दिसंबर 2014 में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद तथा रूसी बुनियादी अनुसंधान केंद्र ने स्वास्थ्य अनुसंधान में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन

पर हस्ताक्षर किए हैं। 8 मई 2015 को, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी एस टी) तथा रूसी विज्ञान प्रतिष्ठान ने बुनियादी एवं अन्वेषणात्मक अनुसंधान की सहायता के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किया। 16वीं वार्षिक शिखर बैठक के दौरान सी-डैक, भारतीय विज्ञान संस्थान (बंगलौर) और मास्को राज्य विश्वविद्यालय ने हाई परफार्मेंस कंप्यूटिंग में सहयोग के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किया है।

सांस्कृतिक सहयोग :

रूस में भारतीय अध्ययन की एक सुदृढ़ परंपरा है। भारतीय दूतावास, मास्को में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र (जे एनसीसी) रूस की अग्रणी संस्थाओं के साथ निकट संबंध बना कर रखता है जिनमें दर्शन संस्थान, मास्को, रसियन स्टेट यूनिवर्सिटी फॉर ह्यूमेनिटीज, मास्को, प्राच्य अध्ययन संस्थान, मास्को, मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी का एशियाई एवं अफ्रीकी अध्ययन संस्थान, सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का अंतरराष्ट्रीय संबंध विद्यापीठ, कजान फेडरल विश्वविद्यालय, कजान और फार ईस्टर्न नेशनल यूनिवर्सिटी, ब्लाडीवोस्तक, रूसी सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, क्रासनोडार, इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल मनुस्क्रिप्ट (सेंट पीटर्सबर्ग), पीटर दि ग्रेट म्यूजियम ऑफ एंथ्रोपोलाजी एवं एंथ्रोग्राफी (कंस्टकामेरा) शामिल हैं। दर्शन संस्थान, मास्को में भारतीय दर्शन संबंधी एक महात्मा गांधी पीठ है। अग्रणी विश्वविद्यालयों और स्कूलों सहित लगभग 20 रूसी संस्थाएं 1500 छात्रों को नियमित रूप से हिंदी पढ़ाते हैं। हिंदी के अलावा, रूसी संस्थाओं में तमिल, मराठी, गुजराती, बंगाली, उर्दू, संस्कृत और पाली जैसी भाषाएं भी पढ़ाई जाती हैं। रूसी लोगों के बीच भारतीय नृत्य, संगीत, योग और आयुर्वेद के प्रति आम तौर पर रुचि है। जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र प्रति माह लगभग 500 छात्रों के लिए योग, नृत्य, संगीत और हिंदी की कक्षाएं संचालित करता है।

भारत एवं रूस के बीच जन दर जन संपर्कों को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से सांस्कृतिक पहले की जाती हैं जिसमें एक-दूसरे की संस्कृति के वर्षों का आयोजन शामिल है। भारत के राष्ट्रपति ने 10 मई 2015 को मास्को में भारतीय संस्कृति वर्ष "नमस्ते भारत" का उद्घाटन किया। "नमस्ते भारत" के अंग के रूप में वर्ष 2015 में रूस के विभिन्न भागों में 8 शहरों में 15 परफार्मेंस की योजना बनाई गई है। 21 जून, 2015 को, रूस में 60 से अधिक क्षेत्रों को शामिल करते हुए तथा 250 से अधिक कार्यक्रमों के साथ पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (आई डी वाई) मनाया गया जिसमें लगभग 45000 योग उत्साहियों ने भाग लिया।

भारतीय समुदाय :

रूसी संघ में भारतीय समुदाय के लोगों की संख्या लगभग 30,000 है। इसके अतिरिक्त, भारतीय मूल के लगभग 1500 अफगान नागरिक रूस में रहते हैं। रूस में लगभग 500 भारतीय व्यवसायी रहते हैं जिनमें से लगभग 200 व्यवसायी मॉस्को में काम करते हैं। अनुमानतः 300 पंजीकृत कंपनियां रूस में काम कर रही हैं। रूस में अधिकांश भारतीय व्यवसायी/कंपनियां व्यापार में लगी हुई हैं जबकि कुछ भारतीय बैंकों, दवा कंपनियों, हाइड्रोकार्बन और इंजीनियरिंग कंपनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन कंपनियों द्वारा भारत से आयात किए जा रहे उत्पादों में चाय, कहवा, तम्बाकू, औषधियां, चावल, मसाले, चमड़े के जूते-चप्पल, ग्रेनाइट, आईटी और परिधान शामिल हैं। रूसी संघ में चिकित्सा एवं तकनीकी संस्थाओं में लगभग 4500 भारतीय छात्र नामांकित हैं। उनमें से लगभग 90 प्रतिशत रूस भर के लगभग 20 विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में चिकित्सा की पढ़ाई करते हैं। 'हिंदुस्तानी समाज' रूस में 1957 से कार्यरत सबसे पुराना भारतीय संगठन है। मॉस्को के अन्य भारतीय संगठनों में इंडियन बिजनेस अलायंस, ओवरसीज बिहार एसोशिएसन, एएमएमए (ऑल मॉस्को मलयाली समाज), डीआईएसएचए (इंडिया-रशिया फ्रेंडशिप सोसाइटी), टेक्सटाइल बिजनेस अलायंस, भारतीय सांस्कृतिक समाज और रामकृष्ण सोसायटी वेदांत केंद्र शामिल हैं। मॉस्को का एम्बेसी ऑफ इंडिया स्कूल नई दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय संगठन से संबद्ध है जिसमें भारत से शिक्षक प्रतिनियुक्त किए गए हैं। इस स्कूल में I से XII तक की कक्षाएं चलती हैं और इसमें लगभग 350 छात्र हैं।

निष्कर्ष

यथार्थवादी व्याख्या के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में स्थायी मित्र या शत्रु जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान, नवउदारवादी वैश्वीकरण और भू-आर्थिक अंतर्संबंध सभी हितधारकों के लिए एक "सकारात्मक-योग खेल" प्रदान करते हैं। भारत की विदेश नीति पर भू-अर्थशास्त्र का भी बड़ा प्रभाव पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में, भारत लाभार्थी और लागत वाहक दोनों रहा है। भारत में पश्चिमी दबाव केवल रूस की निंदा के लिए है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अब तक काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सेंक्शन एक्ट (सीएएटीएसए) लागू नहीं किया है। इससे पता चलता है कि पश्चिमी देशों के अलावा ये देश भी भारत के साथ आर्थिक जुड़ाव के इच्छुक हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रमुख रुचि यूरेशिया के बजाय हिंद-प्रशांत क्षेत्र में है। क्लाड ग्रुपिंग के लिए, भारत इस क्षेत्र में चीन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यही कारण

होगा कि पश्चिमी देश रूस के विरुद्ध भारी सैन्य तैनाती का प्रदर्शन नहीं कर सके।

संदर्भ

बारू, एस. (2012)। भू-अर्थशास्त्र और रणनीति. उत्तरजीविता, 54(3), 47-58.

बेलीस, जे. (2020)। विश्व राजनीति का वैश्वीकरण: अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का परिचय। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यूएसए।

भट्टाचार्य, कल्लोल। (2022, 8 मार्च)। ज़ेलेन्स्की ने मोदी से संघर्ष खत्म करने में मदद करने को कहा। द हिंदू: नई दिल्ली। <https://www.thehindu.com/news/national/zelensky-says-hespoke-to-modi-to-put-an-end-to-war/article65204235.ece> से पुनर्प्राप्त करें

ब्लैकविल, आर.डी., हैरिस, जे.एम. (2016)। अन्य तरीकों से युद्ध. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: लंदन चौधरी, दीपांजन राँया। (2022, 25 फरवरी)। पीएम मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बातचीत में हिंसा खत्म करने की अपील की. द इकोनॉमिक टाइम्स. <https://आर्थिकtimes.indiatimes.com/news/india/ukraine-crisis-pm-modi-speaks-to-putincalls-for-immediate-cessation-of-revolution/articleshow/89809554.cms?from=mdr> से पुनर्प्राप्त करें

कॉक्स, एम. (1990)। ट्रूमैन सिद्धांत से दूसरी महाशक्ति डिटेंटे तक: शीत युद्ध का उदय और पतन। जर्नल ऑफ पीस रिसर्च, 27(1), 25-41। <https://doi.org/10.1177/0022343390027001004>

फुकुयामा, फ्रांसिस. (1989)। इतिहास का अंत. राष्ट्रीय हित के लिए केंद्र. 16/04/2022 को एक्सेस किया गया। <https://www.jstor.org/stable/24027184?seq=1> से लिया गया महापात्र, चिंतामणि. (2022, 4 मार्च)। यूक्रेन संकट पर भारत का दृष्टिकोण सुर्खियों में क्यों है? पहिला पद। <https://www.firstpost.com/world/why-is-indias-dृष्टिकोण-to-the-Ukraine-crisis-under-spotlight-10427291.html> से पुनर्प्राप्त करें

मेनन, श्रुति. (2022)। यूक्रेन संकट: भारत अधिक रूसी तेल क्यों खरीद रहा है? बीबीसी समाचार। <https://www.bbc.com/news/world-asia-india-60783874> से पुनर्प्राप्त करें

टॉलेनफसन, जेफ। (2022)। यूक्रेन में युद्ध का ऊर्जा, जलवायु और भोजन पर क्या मतलब है?



प्रकृति समाचार. <https://www.nature.com/articles/d41586-022-00969-9> से
पुनर्प्राप्त करें